भगत नामदेव - सबद ६

पारब्रह्मु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥

रागु आसा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८६

पारब्रह्मु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥
कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥

सार: बाहरी आकर्षण जो लगातार हमारा ध्यान खींचते हैं, वह आसानी से मन को भ्रमित कर, क्षणिक सुखों का लालच दे सकते हैं। इच्छाओं के मिथ्या जाल से मुक्ति का मार्ग आंतरिक जागृति से होकर जाता है जहाँ हम उस सर्वव्यापक, शाश्वत और असीम शक्ति को पहचानते और समझते हैं कि शेष सब कुछ अस्थायी है। यह समझ बेचैन मन को स्पष्टता प्रदान करती है, विशेषकर तब जब आप ऐसे लोगों से घिरे हों जो आत्मचिंतन पर मजबूर कर, प्रामाणिकता को बढ़ावा देते और सत्य को अपनाते हैं।

पारब्रह्मु जि चीन्हसी आसा ते न भावसी ॥
जो व्यक्ति सर्वव्यापक परम सत्ता को पहचान लेता है, उसे अन्य किसी सहारे या आशा की कामना नहीं रहती।

रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥
सर्वव्यापक शक्ति के प्रति समर्पित और उसकी उपस्थिति का ध्यान करते हुए, मन निश्चिंत और शांत रहता है। (१)

कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥
अगर मन में बुरी नीयत हो तब वह इस संसार के सागर को कैसे पार कर सकता है।

झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥
झूठे भ्रम में फंसा मन भटक गया है। (१)(विराम)

छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥
जबकि, मेरा जन्म एक साधारण छापेख़ाने का काम करने वाले परिवार में हुआ लेकिन जो ज्ञान मुझे अज्ञानता से प्रकाश की ओर ले जाता है, उसने मुझे सर्वव्यापी शक्ति के बारे में बताया।

संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥
नामदेव कहते हैं कि आध्यात्मिक ज्ञान की कृपा से उन्होंने सर्वव्यापी शक्ति का अनुभव किया। (२)(५)

तत्त्व: भक्त नामदेव मन को भ्रमित करने वाले विकर्षणों और आत्म-जागरूकता से प्राप्त होने वाली स्पष्टता का स्मरण कराते हैं। वह अपनी साधारण पारिवारिक शुरुआत के बारे में बताते हैं ताकि दिखा सकें कि जागरूकता हर किसी के लिए उपलब्ध एवं सुलभ है, चाहे उनकी परिस्थिति कुछ भी हो। अनुभव से सीखकर और निर्देशित ज्ञान से, हम भ्रम के सागर में आगे बढ़, उसे पार कर सकते हैं। वह हमें इन भटकाव वाली चीज़ों से आज़ाद होकर, सच्चाई में डूबने के लिए बढ़ावा देते हैं, जहाँ बदलाव की संभावना है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com